वेद कितने पुराने हैं ?

जब कोई व्यक्ति मुझसे यह पूँछता है कि वेद कितने पुराने हैं तो मुझे चक्कर आने लगता है। चक्कर आने की बात ही है ! पाश्चात्य- जगत के विद्वानों के मत तो धर्म-भेद और आध्यात्म-भेद के कारण मानने योग्य ही नहीं हैं, हाँ पूर्व के विचार इस सन्दर्भ में जरुर कारगर सिद्ध होते हैं। फिर यदि वेदों में ही वेदों के पुरान (खासकर कितने पुरानें) होने के प्रमाण मिल जाँय, तो फिर कहना ही क्या है ? जो वेद सदियों तक 'श्रुति' अर्थात् सुनने पर आधारित रहे हों, उनके पुराने और वह भी कितने पुराने होने के प्रमाण खोजने हो, तो सबसे पहले हमें स्वप्रमाण अर्थात् वेदों का ही प्रमाण सच मानना होगा।

सदियों तक जो वेद मंत्र, ब्रह्म, श्रुति, आम्नाय, छन्दस, निगम और प्रवचन के ही रुप में जाने पहचाने गये थे, वे कब अस्तित्व में आये ? इसे जानने के लिये, मेरी समझ से, वेदों के अतिरिक्त, और किसी का प्रमाण, प्रमाण ही नहीं मानना चाहिये, और वेदों में वेदों के पुरानेपन पर केवल दो ही प्रमाण उपलब्ध हैं, जो इस प्रकार हैं:-

१-"**तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।**
छदांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तमादजायत ॥"

- ऋग्वेद, दसवाँ मण्डल, ९० वाँ सूक्त
(वा यजु.अ.३१ में)

२-"**यस्माद्दचो त्रपात क्षन् यर्जुयस्मादपाकषन्।**
सामानि यस्य लोमानि अथर्वां गिरसोमुखम्।
स्कंमं तं ब्रूहि कतमः स्विदेवसः ॥"

- अथर्ववेद, दसवाँ काण्ड, २३ वें प्रकरण के
चौथे अनुवाक् का दूसरा मंत्र

यह दोनो पद्यांश प्रकट करते हैं कि ऋक. यजुः और अथर्व यह तीनों वेद, स्पष्ट कहते हैं कि ऋक. यजुः और साम तथा अथर्व, यह चारों वेद परम पुरुष यज्ञ-भगवान से उत्पन्न हुये हैं।

॥ वेदों का पुरानापन ॥

वेदों का साफ साफ कहना यही है कि चारों वेद सृष्टि की उत्पत्ति के साथ साथ उत्पन्न हुये हैं अर्थात् जब सृष्टि बनी थी, तभी वेद भी बने थे, यही एकमात्र सत्य है। इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण यही है कि जो- 'पुरुष-सूक्त' सृष्टि के आरम्भ में निर्मित हुआ था वह वेदभाग ही था। क्योंकि 'पुरुष-सूक्त' सृष्टि की उत्पत्ति के प्रकरण का भाग है।

॥ ज्योतिष का प्रमाण ॥

हमारे देश के ज्योतिष-शास्त्री भी एक मत से कहते हैं कि सर्गारम्भ से लेकर विक्रमी सम्बत् के सौर वर्ष १९९६ की समप्ति के दिन तक एक अरब ९५ करोड़, ५८ लाख, ८५ हजार २१। सौर

वर्ष और आज (अर्थात् ३१.३.१९९७ई. को) १४६ दिन हो चुके हैं। और ----- यह बाइसवाँ वर्ष विक्रमी २०५४-५५ के साथ साथ चल रहा है। अब आप स्वयँ ही सोच लीजियेगा कि हमारे वेद कितने पुराने हैं !

।। आधुनिक विचार ।।

वेदों के पुराने पन को लेकर आधुनिक विचार बड़े ही गजब के हैं। संसार की प्रत्येक प्राचीनतम-पुस्तक में वेदों का सन्दर्भ वर्णित है, यही इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण है कि येद बहुत पुराने हैं।------- आज के विद्वान सृष्टि के आरम्भ से ही वेदों की उत्पत्ति नहीं मानते। वे तो प्रभु ईसा से कई हजार बरसों पहले से आगे जाने में अशक्य हैं। पीछे के विद्वान (वैज्ञनिक) तो अब सृष्टि को अरबों बरस पुरानी मानने के कारणों का अनुसंधान कर चुके हैं, परन्तु मानव-सृष्टि कुछ लाख वर्षों से अधिक पूर्व की नहीं मानते। भारत की प्राच्य-शैली के विद्वान् तो एक मत से इसे सतयुग के आरम्भ से ही मानते हैं। जो भी हो, वेदों के अत्यन्त पुराने होने में कोई पक्ष लेशमात्र सन्देह नहीं रखता, समय का अनुमान चाहे कुछ भी करे।

।। साधारण साक्ष्य ।।

आज के विद्वान कम से कम इतना तो मानेंगे ही कि, अरबों बरस की परम्परा से लेकर सात आठ हजार बरस की परम्परा तक वेदों के मंत्रों के सुने या देखे जाने या रचे जाने का बहुतों को अनुमान है। यह परम्परा कितनी विस्तारमयी है - इसका अनुमान करना कठिन है। जिन लिखी या छपी किताबों की नकल होती आई है या प्रकाशन में जिनके संस्करण एक एक की जगह कई कई हैं, उनमें दो चार सौ बरस में ही लेखनशैली से, प्रैस की प्रमादता से या फिर पाठकों या पठकों के मतभेद से, जब कितने कितने परिवर्तन हो गये हैं तब वेद जो कि सृष्टि के आरंभ से वर्तमान सतयुग तक अछपित (केवल 'श्रुति' रुप में रहे हैं) उनमें तो ज़मीन-आसमान का अंतर आ गया होगा - वेदों के पुरानेपन का क्या ठिकाना है ? वेदों की इसी दुरुहता को स्पष्ट करने के लिये श्रुति-परम्परा का स्थिर रखना, मंत्रों की टिप्पणी के रुप में ब्राह्मणग्रंथो और आरण्यकों तक को दुरुह बनाये रखना निरुक्तियों की रचनायें करना, और व्याकरण की बाल की खाल खींचने की शैली को जन्म देना जरुरी हो गया था। तब वदों को समझने के लिये स्मृतियाँ बनीं, मीमांसायें रची गयीं, जैमिनी ते कर्मकाण्ड रचा, तब कहीं जाकर दीर्घकाल तक विलुप्ति के अंधकार में पड़े वेद प्रकाश में आये, इसीलिये स्वामी दयानन्द सरस्वती ने केवल संहिता भाग या मंत्रभाग को ही वास्तविक वेद माना है, जो ईश्वरकृत है। यह सारा ताण्डव वेदों के पुरानेपन को लेकर ही हुआ था, जिससे वेद क्लिष्ट से क्लिष्टतर हो गये हैं।

।। पुराणों का प्रयास ।।

जब ऋषि-मुनि वेदों के पुरानेपन को नहीं समझ पाये तब ज्ञान, विज्ञान, उपासना, सृष्टि की कथा और मन्वन्तरादि के साथ पुराणों ने भी एकबार वेदों की ही व्याख्या करने की कोशिश की। सच बात तो यह है कि वेदों के सिद्धातों को छोटी छोटी कथा-कहानियों के माध्यम से समझने के लिये ही पुराणों की रचना हुई थी। पुराण का एक अर्थ 'पुराना' (= पुराना इतिहास) भी है, इसी से वेदों का पुरानापन प्रकट हो जाता है।

सृष्टि की उत्पत्ति के साथ साथ वेदों की भी तो उत्पत्ति हुई है, इसबात को पहलीबार 'मत्स्यपुराण' ने कहा था -

''तपश्चार प्रथमं अमराणां पितामह: ।
आर्विभूतास्ततो वेदा: साङ्गोपदक्रमा: ।।

.....

अनन्तरश्च वक्त्रेभ्यो वेदास्तत्र विनि:सृता: ।।''

(मात्से, अ.३ श्लो. २-४)

अर्थात् - ब्रह्मा के (चारो) मुखों से (चारो) वेद निकले।

।। वेदों के संस्करण ।।

गजब की बात यह है कि इसी पुराण (मत्स्यपुराण) में वेदों के नये नये संस्करणों की रुपरेखा प्रस्तुत करने की बात का पूरा वर्णन मिलता है। स्वयँ 'मत्स्यपुराण' के १४४ वें अध्याय में द्वापर के अंत की भविष्यवाणी करते हुये, कहा गया है, कि :-

''एको वेद: चतुष्पाद: सहत्यतु पुन: पुन: ।
संक्षेपादायुषश्चैक व्यस्यते द्वापेरष्विह ।।१०।।
वेदश्चैकश्चतुर्धा तु व्यस्यते द्वापरादिषु ।
ऋषिपुत्रै: पुनर्वेदा मिद्यन्ते दृष्टिविभ्रमै: ।।११।।
मंत्रब्राह्मण विन्यासै: स्वरक्रमविपर्य्ययै: ।
संहृत्यऋग्यजुस्साम्नां संहितास्तैर्महर्षिमि: ।।१२।।
सामान्याद्वैकृताच्चैवदृष्टिभिन्नै:क्वचित्क्वचित् ।
ब्राह्मणं कल्पसूत्राणि भाष्यविद्या स्तथैव च ।।१३।।
अन्येतु अस्थितास्तान्वै केचित्तान्प्रत्यवस्थिता: ।
द्वापरेषु प्रवर्तन्ते भिन्नार्थैस्तै: स्वदर्शनै: ।।१४।।
एकमाध्वर्य्यवं पूर्व्व आसीद्दैघन्तु तत्पुन: ।
सामात्य विपरीतार्थै: कृतं शास्त्राकुलन्विनम् ।।१५।।
तथैवाथर्व ऋकसाम्नां विकल्पैश्चाप्य संक्षयै: ।
व्याकुलोद्वापरेष्वेर्थ: क्रियते भिन्नदर्शनै: ।।१६।।
द्वापरे संनिवृत्तेते वेदानश्यन्ति वै कलौ ।''

।। अर्थ ।।

एक लेखक इसका मर्म इन शब्दों में समझाता है :-

''मत्स्यभगवान् ने भविष्य की कथा कही है, परन्तु उससे पता

लगता है कि सतयुग और द्वापर के दीर्घकाल और अत्यन्त लम्बी परम्परा में, सभी चतुर्य्युगियों में, पहले तो भांति भांति की भूलों से चारो वेद मिलकर एक आध्वर्य्यव अर्थात् यज्ञ-धर्म्म-विशिष्ट त्रेता के अनुकूल यजुर्वेद रह जाता है। (अ. १४२) फिर वह भी बारम्बार परिवर्तित होता रहता है, जिसका कारण लोगों की अपात्रता तथा अस्वस्थ और अल्पायु जीवन है।

द्वापर में आकर उसके अनेक खण्ड और विविध शाखायें बन जाती हैं। ऋषियों के वंशज दृष्टि, स्मृति आदि में भूलें करते हैं। मंत्रो को अस्तव्यस्त करते हैं, ब्राह्मणों और कल्पसूत्रों का भी क्रम भंग हो जाता है, स्वर और क्रम में भेद पड़ जाता है। वेदों के ऋषियों को इसीलिये ऋक्. यजुस् और सामत् तीनों को बारम्बार फिर फिर से संकलित करना पड़ता है। यजुर्वेद पहले एक ही रहता है। उसके दो पाठ (शुक्ल और कृष्ण) हो जाते हैं। इसी तरह द्वापर में ही ऋक् यजुस्सामत् के अर्थों का विपर्य्यय हो जाता है। कलियुग में तो उनका नाश ही हो जाता है।''

।। सिंहावलोकनीय-निर्ष्कष ।।

इस अवतरण से यह बात बिलकुल साफ हो जाती है कि वेदो के नये नये संस्करण युग युग में होते ही रहते हैं और हर द्वापर के अंत में वेद भगवान वेदव्यास की कृपा से (जो कि स्वयँ भगवान विष्णु के एक अंशावतार हैं) वेदों के अन्तिम और व्यवस्थित चार रुप प्रकट कर देते हैं। वे वेदों का व्यास कम या ज्यादा करते हैं इसीलिये 'वेद व्यास' कहलाते हैं।

वेदों का उद्धार, प्रकाशन, लेखन और संस्करण हर युग में होकर द्वापर में पूर्णावस्था प्राप्त कर लेता है। यही वेदों के बनने-बिगड़ने और सँवरने की कहानी है।

।। महाभारत का साक्ष्य ।।

पुराणों के मत्स्यावतार के अतिरिक्त 'महाभारत' के 'शल्य-पर्व' में भी एक कहानी आती है जिसमें कहा गया है कि एक बार जब अवर्षण के कारण ऋषिलोग देश (= भारत से बाहर) बारह बरस तक रहकर वेदों को भूल गये थे तब दधीचि और सरस्वती के पुत्र सारस्वत ऋषि ने भी अपने से कहीं अधिक बूढे ऋषियों को फिर से वेद पढाया था। फिर दत्तात्रेय ने भी वेदो का उद्धार किया था। अरे दूर क्यों जाते हो ? आज से पाँच छै: सौ वर्ष पहले सायणाचार्य्य आदि का काम भी तो यही था और सायण के पीछे भी सबलोग वेदों का केवल नाम मात्र ही जानते थे।

दक्षिण में घोखने की थोड़ी विधि के अतिरिक्त वास्तविक वेदों का अध्ययन प्राय: कहीं भी नहीं होता था। इसीलिये आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी प्राय: वही काम किया था जो द्वापर के अंत में वेदव्यास ने किया था। मेरी दृष्टि में वेदव्यास और दयानन्द एक जैसी ही विराट और दिव्य प्रतिमा के ब्राह्मी स्थिति वाले आप्त महापुरुष थे। वेदव्यास के शिष्यों की ही तरह दयानन्द के शिष्य भी थे। मेरा अपना विश्वास है कि वेद मत्स्यभगवान के उद्गार हैं जो वेदव्यास द्वारा मुद्रित हैं और दयानन्द द्वारा अर्थित हुये हैं। वेदो के विषय हैं १ कर्मकाण्ड २-ज्ञानकाण्ड, और ३ - उपासनाकाण्ड। यही वेदों का सार है।

।। चेतावनी ।।

अंत में, मैं यह कहना भी अपना पहला कर्त्तव्य समझता हूँ कि वेद-पाठ की जो एक पुरानी परम्परा चली आई है कि ऋषि छंद, देवता और विनियोग के बिना जाने वेद मंत्रो का पढना या पढाना पाप है ; शत प्रतिशत सत्य है। किस मंत्र को किस ऋषि ने प्रकट किया है, वह मंत्र किस छंद में है, अर्थात् वह कैसे पढा जायेगा, उस छंद में किस देवता के बारे में वर्णन है और उस मंत्र का प्रयोग किस काम में होता है, इन बातों को जाने बिना जो लोग वेद-मंत्रो को काम में लाते हैं, वह लोग ''मंत्र कण्टकी'' कहलाते हैं। इसी परम्परा के कारण प्रत्येक मंत्र के यह ज्ञातव्य -विषय लुप्त नहीं हो पाये हैं और आजतक सुरक्षित भी हैं। कदाचित वेदो के पुरानेपन का इससे बड़ा इतिहास-सम्मत्त-मत, मेरे विचार से, इस संसार में, दूसरा और कोई नहीं है।

परन्तु हमारे वेद तो इस अर्थात् वर्तमान सृष्टि से भी पूर्व के हैं। प्रमाण देखियेगा -

।। वेद सृष्टि-पूर्व के हैं ।।

ऋग्वेद की 'नासदीय-सूक्ति' का सातवाँ बन्ध देखिये, जो कहता है-

'' इयं विसृष्टिर्यत आबभूव यदि वा दधे यदि वा न।
यो अस्याध्यक्ष: परमेव्योमन्त्सो अङ्गवेद यदि वा न वेद॥७॥''

- ऋ. अ. ८ / अ. ७ / ब. १७

भावार्थ :-

' सचमुच कौन जानता है और यहाँ कौन कह सकता है कि (यह सब) कहाँ से उपजा और इस विश्व की सृष्टि कहाँ से आई ? देवताओं की उत्पत्ति पीछे की है और यह सृष्टि पहले आरम्भ हुई। फिर कौन जान सकता है कि यह सब कैसे आरम्भ हुई। (वेद ने जो उर्पयुक्त वर्णन किया है वह वेदों को ही कैसे ज्ञात हुई, यहाँ ब्याज से वेदों का अनादि होना व्यंजित किया गया है) जिससे इस विश्व की सृष्टि आरम्भ हुई, उसने यह सब रचा है। (अपनी इच्छा-शक्ति से सृष्टि की प्रेरणा की है) या नहीं रचा है अर्थात उसकी प्रेरणा के बिना ही आप ही आप हो गयी है। परम-व्योम में जिसकी आँखे इस विश्व का निरीक्षण कर रही हैं, वस्तुत: (इन दोनों बातों के रहस्य को) वही जानता है। या शायद वह भी नहीं जानता (क्योंकि उस निर्गुण और निराकार में सृष्टि से पहले ज्ञान इच्छा और क्रिया इन तीनों का भाव नहीं था ।।'

॥ व्याख्या ॥

वेद सृष्टि-पूर्व का रेखाचित्र खींचते हैं, इससे यह सिद्ध हो जाता है कि वेद इस सृष्टि से पूर्व की किसी सृष्टि के हैं। यह वेदों के अनादित्व का अर्थात् पुरानेपन का सबसे बड़ा प्रमाण हैं।

॥ वेद का इतिहास लिखना व्यर्थ था ॥

हिन्दुओं पर प्राय: यह आरोप लगाया जाता है कि उन्हौंने अपना इतिहास नहीं लिखा बेकार की बात है। यदि हिन्दूजाति अपना इतिहास लिखती तो क्या लिख सकती थी? ''हिन्दुत्व'' के लेखक श्री. रामदास गौड़ ने ठीक ही लिखा है कि -

''----- भारत की परम्परा इतनी प्राचीन बताई जाती है की यदि उस काल से लेकर आज तक का इतिहास वर्त्तमान होता और अत्यन्त संक्षेप से लिखा जाता तो सौ सौ बरस के लिये केवल एक एक पृष्ठ लिखा जाता तो १ करोड ९६ लाख ८६ हजार ४३१ पृष्ठ होते और यदि एक एक हजार पृष्ठों की एक एक जिल्द होती तो १९ हजार ६०८ मोटी मोटी जिल्दें होतीं। यह तो संक्षिप्त इतिहास होता। बहुत जल्दी दृष्टिमात्र से २५ पक्तियों के पढ़ डालने में १ मिनट का लगना और ५ घण्टे रोज लगातार पढना मान लें और यह मान लें कि प्रत्येक पृष्ठ में २५ ही पंक्तिया हैं, और यह भी मान लें कि महीने में २५ दिन बराबर पुस्तकें पढी जायँगी तो दो सौ सत्रह बरस लगेंगे। और अगर हम यह भी मान लें कि सौ सौ बरस का इतिहास एक एक पृष्ठ में नहीं बल्कि एक एक पंक्ति में लिखा जाय, अर्थात् एक एक पृष्ठ में ढाई ढाई हजार बरसों का इतिहास संक्षिप्त कर दिया जाय, तो एक एक हजार पृष्ठों की ७८४ जिल्दें होती हैं जिनको उतनी ही उतावली से लगातार पढने में आठ बरस से ऊपर लगेंगे। इतनी लम्बी परम्परा का इस तरह का इतिहास होना भी असम्भव है जिस तरह का इतिहास इन परम्पराहीन-राष्ट्रों की कल्पना है, और हो भी तो इस युग और संसार के लिये नितांत निरर्थक है।''

अब कहिये; कौन करे वदों के पुरानेपन की इस लम्बी गाथा की बात? आप ही बताइयेगा।

॥ अंत में ॥

इस लेख के अंत में मैं यह बात और कह देना चाहता हूँ कि वेदों के पुरानेपन के साक्ष्य स्वयँ वेदों में ही यत्र-तत्र- सर्वत्र बिखरे पड़े हैं और चूँकि वेद स्वत: प्रमाण हैं; इसलिये उनका उल्लेख कर देना अभीष्ट ही होगा। ऋग्वेद की 'नासदीय-सूक्ति' के बाद; ऋग्वेद का 'पुरुषसूक्त' सर्वाधिक प्रसिद्ध है जिसका सॉतवाँ श्लोक कहता है :

'' तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋच: सामानि जज्ञिरे।
छंदसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ८ ॥ यजु. ३१-७

॥ अर्थात् ॥

'(तस्माद्यज्ञात् स.) सत, जिसका कभी नाश नहीं होता, चित् जो सदा ज्ञानस्वरुप है, जिसके ज्ञान का लोप भी कभी नहीं होता, आनन्द जो सदा सुखस्वरुप और सबको सुख देने वाला है, इत्यादि लक्षणों मे युक्त पुरुष जो जगत में पूर्ण परिपूर्ण हो रहा है, जो मनुष्यों के उपासना के योग्य इष्टदेव और सब सार्मथ्य युक्त है, उसी परब्रह्म से (ऋच:) ऋग्वेद (यजु:) यजुर्वेद, (सामानि) सामवेद और (छन्दांसि) इस शब्द से अथर्ववेद भी, ये चारो वेद उत्पन्न हुये हैं, इसलिये सब मनुष्यों को उचित है कि वे वेदों को ग्रहण करें। और वेदोक्त रीति से चलें। (जज्ञिरे) और (अजायत) इन दोनो पदों के अधिक होने से यह निश्चय जानना चाहिये कि ईश्वर से ही वेद उत्पन्न हुये हैं, किसी मनुष्य से नहीं।'

॥ एक खोज और ॥

यदि मेरे समकालीन पश्चिमी-विचारों से पोषित इग्लिंश -दाँ वेदों के पुरानेपन को वैज्ञानिक-तरीकों से प्रमाणित करने के इच्छुक हैं तो मैं उनके सामने ऋग्वेद के कुछ ऋषियों के नाम प्रस्तुत करता हूँ; जिन ऋषियों की रचनायें, या उनके द्वारा प्रकट किये गये सूक्त ऋग्वेद में आये हैं क्योंकि वेदों में ऋग्वेद सबसे ज्यादा पुराना है।

॥ ऋग्वेद के ऋषि ॥

ऋग्वेद के मुख्य मुख्य ऋषि इस प्रकार हैं :-

१.मधुच्छद २.जेत ३.मेघातिथि ४. शुन:शेप ५.हिरण्यस्तूप ६. कण्व ७. प्रकव ८. सव्य ९. नोघ १०. पराशर ११. गोतम १२. कुत्स १३. कश्यप १४. ऋज्रस्व १५.तृताप्त १६. कक्षिवन् १७. भावयव्य १८. रोमश १९. परुच्छेप २०. दीर्घतमस् अगस्त्य २१. इन्द्र २२. मरुत २३. लोपामुद्रा २४. गृत्समद २५. सोमहूति २६. कूर्म २७. विश्वमित्र २८. ऋषभ २९ उत्कल ३०. कट ३१. देवाश्रवा ३२. देवव्रत ३३. प्रजापति ३४. वामदेव ३५. अदिति ३६. त्रसदस्यु ३७. पुरुमिल्ह ३८. बुध ३९.गविष्ठि: ४०.कुमार ४१. ईश ४२. सुतम्भरा ४३. धरूण ४४. पुरू ४५. ववृ ४६. द्रित ४७. प्रयस्वत ४८. शश पुरू ४९. विश्वसाम ५०. द्युम्न ५१. विश्वचर्षणि ५२. गोपपण ५३. वसुयु ५४. त्र्यारूण ५५. त्रश्वमेघ ५६. अत्रि ५७. विश्ववर ५८. गौरीरीती ५९. बभ्र ६०. अवस्यु ६१. गतु ६२. समवरण ६३. पृथु ६४. वसु ६५. अत्रिभूय ६६. अवत्सरादि ६७. प्रतिक्षत्र ६८. प्रतिरथ ६९. प्रतिमानु ७०. पुरूहनमन ७१. सुदीति ७२. पुरूभीड ७३. हर्यट ७४. गोपवन ७५. सप्तवधृ ७६. विरूप ७७. कुरूसुति ७८. कृत्नु ७९. एकद्यु

८०. कुसिदी ८१. उषणाकाव्य ८२. कृष्ण ८३. विश्वक ८४. द्युम्निक ८५. नृमेघ ८६. अपाला ८७. श्रुतकक्ष ८८. सुकक्ष ८९. विन्दु ९०. पूतदक्ष ९१. तिरश्च ९२. द्युतान ९३. रेह जमदग्नि ९४. नेम ९५. प्रयोगयविष्ट ९६. प्रस्कण्व ९७. पुष्टिगु ९८. आयु ९९. मातरिश्वा १००. कृश १०१. पृषद्र १०२. सुपर्ण १०३. असित १०४. देवल १०५. दृढच्युत १०६. इघ्मवाट्ट १०७. श्यावश्व १०८. प्रभुवसु १०९. रहुगण ११०. बृहन्मति १११. अपास्य ११२. कवि ११३. उचथ्य ११४. अवत्सार ११५. अमहीपु ११६. निघ्नुवि ११७. मृगु ११८. वैखानस ११९. अत्रि १२०. पवित्र १२१. रेणु १२२. हरिमन्त १२३. बेन १२४. अकृष्टभाष्या: १२५. अजा: १२६. गृतसमद् १२७. प्रतर्दन १२८. व्याघ्रपाद १२९. कर्णश्रुत १३०. अम्बरीश १३१. रिजस्वा १३२. रेमसूनु १३३. ययाति १३४. नहुष १३५. शिखण्डीनी १३६. चश्रु: १३७. सप्तर्षि १३८. गौरी १३९. रीति १४०. उर्ध्वसप्न १४१. कृतयक्ष १४२. ऋणञ्चय १४३. शिशु १४४. त्रिशिरा १४५ यम १४६. यमी १४७. शङ्ख १४८. दमन १४९. देवश्रवा १५०. सङ्कुसुक १५१. मथित १५२. च्यवन १५३. सुक्र १५४. लुषा १५५. अमितया १५६. घोषा १५७. सुहृत्य १५८. सप्तगु १५९. वैकुण्ठ १६०. बृहदक्थ १६१. माता सहित गोपायन १६२. नामानेदिष्ट १६३. सुमित्र १६४. जरत्कारू १६५. स्यूमरश्मि १६६. विश्वकर्मा १६७. मूघन्व १६८. शरपात १६९. तान्व १७०. अर्बुद १७१. पुरूरवा १७२. उर्वशि १७३. सर्वहरि १७४. निषज १७५. देवापि १७६. वभ्र १७७. दुवस्य १७८. मुद्गल १७९. अप्रतिरथ १८०. भूतांश १८१. सरमा १८२. पाणि: १८३. जुहू १८४. राम १८५. कष्टदंष्ट्र १८६. नमप्रमेदन १८७. शत प्रमेदन १८८. साधि १८९. धर्म १९०. अपस्तुत १९१. अग्निपूय १९२. भिक्श्रु १९३. उरूक्षय १९४. लव १९५. बृहद्विव १९६. हिरण्यगर्भ १९७. चित्रमहा १९८. कुलमल १९९. बर्हिष २००. विहव्य २०१. यज्ञ २०२. सुदास २०३. मानघाता २०४. ऋष्यश्रृङ्ग २०५. वृषाणक २०६. विप्रजूति २०७. व्यँङ्ग २०८. विश्वावसु २०९. अग्निपावक २१०. अग्नितापस २११. द्रोण २१२. साम्बमित्र २१३. पृथुवन्व २१४. सुवेद २१५. मृडिका २१६. श्रद्धा २१७. इन्द्रमाता २१८. शिरिम्बिशा २१९. केतु २२०. भुवन २२१. यक्षमानशन् २२२. रक्षोहा २२३. विवृहा २२४. प्रचेता २२५. कपोत २२६. अनिला २२७. शबर २२८. विभ्राज २२९. इत २३०. संम्वर्त २३१. ध्रुव २३२. अमिवर्त २३३. ऊध्ववग्रीवा २३४. पतङ्ग २३५. अरिष्टनेमि २३६. शिवि २३७. सप्तघृति २३८. श्येन २३९. सापराज्ञि २४०. अघर्मषण २४१. सवबन २४२. प्रतिप्रभ २४३. स्वस्ति २४४. स्यवस्त २४५. श्रुतिप्रभ २४६. शतहव्य २४७. यजट २४८. उरूचक्रि २४९. बहुवृक्त २५०. पौर २५१. अवस्यु २५२. सप्तवधृ २५३. यवापमरूत २५४. भरद्वाज २५५. वितहव्य २५६. सुहोत्र २५७. शुनहोत्र २५८. नर २५९. सम्पु २६०. गर्ग २६१. ऋजिस्वा २६२. पायु २६३. वासिष्ट २६४. मैत्रावरूणी २६५. वशिष्ट २६६. शक्ति २६७. वाशिष्ठा २६८. प्रगाथकण्व २६९. मेघातिथि २७०. आसँङ्ग २७१. शस्वति २७२. देवातिथि २७३. ब्रह्मतिथि २७४. वत्स २७५. पुनर्वत्स २७६. साध्वंश २७७. शशकर्ण. २७८.नारद २७९. गोषूक्ति २८०. अश्वसूक्ति २८१. इरिम्बिथि २८२. सौभरि २८३. विश्वमना २८४. वैवस्तवत मनु २८५. कश्यप २८६. निपतिथि २८७. सहस्त्रवसु २८८. रोचिशा १८९. श्यावाश्व २९०. नाभाग २९१. त्रिशोक २९२. भर्ग २९३. कलि २९४. मत्स्य और २९५. मान्य।

इन, २९५ नामों में से अनेक नाम तो ऐसे है जिनका ज्ञान आज भी अनेकों को होगा। इसलिये इन नामों का समय जानकर कोई भी खोजी-जिज्ञासु आज यह पता कर सकता है कि वेद कितने पुराने हैं ..... एकबार अमेरिका के एक घमंडी पादरी ने स्वामी विवेकानन्द को अपने चर्च में बुलाकर उन्हें तीन ग्रंथो की ढेरी दिखाई। यह तीन ग्रंथ थे गीता, कुरान और बाइबिल। सबसे नीचे गीता थी, बीच में कुरान और सबसे ऊपर बाइबिल थी। उस पादरी ने स्वामी जी को चिढाते हुये कहा कि जो ग्रंथ सबसे ऊपर है वही ग्रंथ सबसे बड़ा है। स्वामीजी ने हँसकर उत्तर देते हुये कहा कि 'जो भी हो, जो ग्रंथ सबसे नीचे है वही ग्रंथ संसार के हर धर्म ग्रंथ का आधार है। जड़ है। प्राणबिन्दु है।' पादरी स्वामीजी का मुँह देखता रह गया। .. आशा है, मेरे पाठक मेरा आषय समझ गये होंगे। और यह सभी जानते हैं कि गीता वेदोक्ति है। वेदों से भी दो कदम आगे।

- रसिक बिहारी मंजुल
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली - ७